परिचय

सुसमाचार के मरकुस के विवरण को उपयुक्त रूप से ‘‘शुभ समाचार का सुसमाचार’’ कहा जा सकता है। यह अपना परिचय ‘‘परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ’’ के रूप में करवाता है (1:1)। असाधारण जीवंतता वाले, कार्यवाही करने वाले विवरण और ईश्वरीय सामर्थ तथा यीशु के सेवक स्वभाव के स्पष्ट प्रकाशन के साथ यह, स्वर्ग को पृथ्वी पर ले आता है। यह कहना सही होगा कि इसे परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह की प्रेरणा से दिए सुसमाचार के चारों विवरणों में दूसरा स्थान प्राप्त है।

इसका आरम्भ

दूसरी और तीसरी सदियों की आरम्भिक कलीसिया के धर्मशास्त्री मत्ती, लूका और यूहन्ना से अधिक उद्धृत करते थे; परन्तु आरम्भिक कलीसिया में सुसमाचार के मरकुस के विवरण को काफ़ी हद तक बहुत कम इस्तेमाल किया जाता है। यह तथ्य कि मरकुस में थोड़ी अलग सामग्री पाई जाती है इस बात का कारण हो सकता है कि उन आरम्भिक सदियों में इससे दूर रहा जाता था।

इरेनियुस, जिसने दूसरी सदी के दूसरे भाग में लिखा, माना कि मरकुस को मत्ती के बाद लिखा गया।[1] बहुत बाद में, अगस्टिन ने मरकुस को मत्ती की सहायक और संक्षेप करने वाली माना।[2] यदि इस प्रकार के विचार से आरम्भिक कलीसियाओं को प्रभावित करते थे, तो सदस्य आसानी से सुसमाचार के इस विवरण को नापसंद करने के लिए प्रेरित हो सकते थे।

परन्तु मरकुस में दिलचस्पी की इस आरम्भिक कमी को यह न मान लें कि इसमें परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त पुस्तक का राजसी खरापन नहीं था। हम जानते हैं कि इसे सुसमाचार के चार विवरणों में से एक के रूप में दूसरी सदी के मध्य से पहले विवरण किया जाता था। हेनरी बार्कले स्विटे ने यह साफ़ दावा किया कि मरकुस के अनुसार सुसमाचार को इसके आरम्भ से ही चारों पवित्र विवरणों में से एक माना जाता है, और इस कारण इसे नये नियम के सभी प्राचीन संस्करणों में और नये नियम में कैनन की सभी आरम्भिक सूचियों में शामिल किया जाता था। कोई संदेह नहीं कि पुस्तक की प्रामाणिकता सुसमाचार के साथ इसके उस सम्बन्ध से जुड़ी थी जिसका प्रचार प्रेरित पतरस अपने मरने तक करता रहा।[3]

इसका शीर्षक

इस पुस्तक के सबसे प्राचीन शीर्षकों में से एक ‘‘मरकुस के अनुसार’’ है। ज्ञात प्राचीनतम हस्तलेखों में इसकी केवल इतनी सी पहचान मिलती है। शायद, किसी आरम्भिक समय पर, किसी प्रतिलिपिक ने मरकुस की पत्री को इसके विवरणात्मक नाम के साथ लिखना आरम्भ कर दिया, और उसे आज तक इस्तेमाल किया जाता है। फिर भी इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है कि सुसमाचार के विवरण के अंदर लेखक के नाम का कोई संदर्भ नहीं है।

इसकी लम्बाई

मरकुस यीशु के जीवन के चारों विवरणों में सबसे संक्षिप्त है। यह लूका का जो कि सुसमाचार के विवरणों में सबसे लम्बा है, केवल दो तिहाई है। तुलना के हिसाब से, मरकुस में सोलह अध्याय हैं जिनमें 678 आयतें हैं। यूहन्ना में इक्कीस अध्याय हैं जिनकी 879 आयतें हैं। मत्ती में अठाइस अध्याय हैं जिनमें 1,071 आयतें हैं, जबकि लूका में चौबीस अध्याय हैं जिनकी 1,151 आयतें हैं।[4]

सुसमाचार का मरकुस का विवरण चाहे सबसे छोटा है, परन्तु यह नये नियम की पत्रियों में सबसे लम्बे, प्रकाशितवाक्य से लम्बा है। सुसमाचार के चारों विवरण मिलकर नये नियम का लगभग आधा भाग बन जाते हैं। नये नियम के कैनन में सुसमाचार के विवरणों को दी गई जगह परमेश्वर के सम्पूर्ण प्रकाशन के लिए उनके महत्व को दर्शाती है। सुसमाचार के विवरणों का ध्यान से अध्ययन किए बिना परमेश्वर की सनातन मंशा को समझना आरम्भ भी नहीं किया जा सकता।

इसकी बनावट और शैली

सुसमाचार के मरकुस के विवरण में लुभाने वाली स्पष्टवादिता है। यह संक्षिप्त, स्पष्ट, छोटा और यथार्थ और सजीवता के साथ दिखाई देता है। इस विवरण में जन्म के वृत्तांत नहीं बताए गए हैं और पहले अध्याय की आयत 2 के साथ यह तुरन्त यूहन्ना बपतिस्मा देने वालों की सेवकाई में चला जाता है।

जहां तक यीशु के सार्वजनिक सम्बोधनों की बात है, पुस्तक में उसके केवल दो लम्बे उपदेश हैं (4:3–32; 13:5–37)। इसे छोड़ दिए जाने से सुसमाचार के इस विवरण में से अन्य तीन विवरणों की तुलना में यीशु की शिक्षाएं कम हैं।

मरकुस में कुछ आयतें हटकर हैं। सुसमाचार के इस विवरण की शायद पचास के लगभग आयतें होंगी, जो मत्ती और लूका में नहीं मिलती हैं।[5] इस तथ्य के कारण लोगों ने यह मान लिया है कि लेखक ने पतरस द्वारा सुनाई गई सुसमाचार की कहानी का सार ही लिखा।

लेखन की शैली में सादगी के साथ यथार्थ भी है। एक सीधे सरल तरीके से पाठक लगभग प्रत्यक्षदर्शी ही बन जाता है। लिखने की शैली को पढ़ने में आसान देखकर, जेम्स आई. मौरिसन ने इसे ''सादा, सादगीपूर्ण, बिना साज सजावट के और कुल मिलाकर साहित्यिक कौशल या कला से वंचित'' बताया।[6]

सुसमाचार के इस विवरण को जल्दी–जल्दी बताया गया माना जाता है। राल्फ अरल ने मरकुस को किसी मूवी के जैसा होना बताया: ''कहा जा सकता है कि जहां मरकुस और लूका हमें मसीह के जीवन के रंगदार पहलू देते हैं और यूहन्ना सोचा समझा चित्र दिखाता है, वहीं मरकुस हमें प्रभु की सेवकाई की चलती हुई तस्वीर देता है।''[7] मेरविन आर. विन्सेंट ने मरकुस को ''प्रमुख रूप में, सचित्र सुसमाचार'' नाम दिया है।[8] शब्द चाहे बहुत कम इस्तेमाल किए गए हैं, परन्तु यह विवरण हर बार कुछ ऐसा दिखा देता है जिसे सुसमाचार के अन्य विवरण नहीं बताते।

मरकुस हमें इस कहानी के पात्रों के दिलों में झांकने देता है। पुस्तक दिखाती है कि यीशु के

चेलों ने उसकी बातों और कामों पर अपने मन में क्या प्रतिक्रिया दी (4:41)। इसी प्रकार से यह उसके इर्द-गिर्द जमा होने वाली भीड़ के मानसिक जवाब के बारे में भी बताती है (1:27; 2:7)।

वाक्य रचना और काल के इस्तेमाल के सम्बन्ध में, मरकुस 151 बार यूनानी ''ऐतिहासिक वर्तमान'' का इस्तेमाल करता है।[9] साफ़ तौर पर लेखन की इस तकनीक का इस्तेमाल ''किसी घटना को इतनी स्पष्टता से दिखाना है, जैसे कि पाठक उस दृश्य को देखने के लिए वहीं हो।''[10]

पुस्तक में कहीं कहीं किसी वाक्य के पहले भाग में अनिर्दिष्टकाल का इस्तेमाल किया गया है और इसे वाक्य के दूसरे भाग में वर्तमान काल के साथ मिला दिया गया है (1:30)। एक ही उद्देश्य की पूर्ति के लिए इसमें वर्तमान के साथ अपूर्णकाल का इस्तेमाल भी किया गया है (1:37)। इस प्रकार मरकुस वर्तमान की कार्यवाही को दिखाने के लिए अतीत और वर्तमान दोनों को प्रभावशाली ढंग से मिला देता है। इसके अलावा, व्याकरण की इस संरचना के साथ, कहानी की प्रस्तुति के लिए मरकुस एक स्पष्ट और तेज गति देता है।

इसका लेखक

मरकुस यीशु का प्रेरित नहीं था (मत्ती 10:1-4; मरकुस 3:16-19; लूका 6:13-16; देखें प्रेरितों 1:13)। परन्तु यह तथ्य उसकी पुस्तक को अपने प्रतिपालक के संस्मरणों का परमेश्वर की प्रेरणा रहित संग्रह नहीं बना देता। नि:संदेह पतरस या किसी अन्य प्रेरित ने मरकुस पर हाथ रखे होंगे और उसके लिए प्रार्थना की होगी; और पवित्र आत्मा ने उसे एक या अधिक आत्मिक दान दिए होंगे, जो शायद भविष्यद्वाणी और शिक्षा के दान हो सकते हैं (देखें प्रेरितों 8:14-17; 1 कुरि. 12:28)। उसके दानों की चमत्कारी शक्ति ने उसे परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त सुसमाचार का मरकुस का विवरण लिखने देने के योग्य बनाया।

नये नियम में ''मरकुस'' नाम आठ बार आता है।[11] कई बार केवल ''मरकुस'' ही लिखा होता है और कई बार वचन में ''यूहन्ना जो मरकुस कहलाता है'' होता है। इसकी पहचान केवल ''यूहन्ना'' के रूप में भी की गई है (प्रेरितों 13:5, 13)। KJV में प्रेरितों 12:12 में ''यूहन्ना, जिसका उपनाम मरकुस था'' है। ये दोनों नाम दो संसारों के साथ मरकुस के सम्बन्ध को दिखाते हैं। ''यूहन्ना'' उसकी पृष्ठभूमि को दिखाता है और ''मरकुस'' रोमी प्रभाव को दिखाता है।

प्रेरितों 12:12 यह भी कहता है कि वह ''मरियम'' नाम की एक स्त्री का पुत्र था, जो यरूशलेम में रहती थी (देखें प्रेरितों 11:2)। उसका घर जिसमें एक फाटक, एक दासी, और बहुत से लोगों के इकट्ठा होने के लिए पर्याप्त जगह दिखाई गई है, यह संकेत देता है कि वह स्त्री धनवान थी। स्पष्टतया उसका घर आरम्भिक मसीही लोगों के समूह के लिए ''लगातार'' इकट्ठा होने का स्थान था।

जब बरनबास और शाऊल यरूशलेम से अंताकिया में लौटे, तो पवित्र आत्मा ने पहली मिशनरी यात्रा के लिए उन्हें अलग कर दिया। अपनी पहली यात्रा अंताकिया में छोड़कर उन्होंने मरकुस को अपने साथ ले लिया (प्रेरितों 12:25)। वह उनके काम में अवश्य ही सहायक रहा होगा। लूका ने मरकुस के लिए ''सेवक'' (ὑπηρέτην, *hupēretēn*) शब्द इस्तेमाल किया: ''और सलमीस में पहुंचकर, परमेश्वर का वचन यहूदियों के आराधनालयों में सुनाया। *यूहन्ना उनका सेवक था*'' (प्रेरितों 13:5)। जिस यूनानी शब्द का इस्तेमाल लूका ने किया है

उसे अलग-अलग प्रकार से अनुवाद किया गया है। NASB और NIV में “helper”; ASV में “attendant”; KJV में “minister”; और NKJV और CEB में “assistant.” इस्तेमाल हुआ है। मरकुस को इस काम के लिए वैसे अलग नहीं किया गया था जैसे बरनबास और पौलुस को किया गया था; परन्तु सफ़र लम्बा और कठिन होने के बावजूद एक जवान मसीही के जोश के साथ उसने उनके साथ जाने की चुनौती स्वीकार कर ली थी।

पंफूलिया के पिरगा में पहुंचकर मरकुस पौलुस और बरनबास को छोड़कर यरूशलेम में लौट गया (प्रेरितों 13:13)। उसके जाने का कारण पता नहीं है; अनुमानों में उसके घर की याद सताने, मलेरिया होने और जोखिम का भय होना शामिल है। एशिया माइनर के अपने अनुसंधान में, विलियम एम. रामसे को कोई विशेष कारण नहीं मिला कि मरकुस क्यों वापस चला गया।[12]

पिरगा में मिशनरी कार्य के साथ मरकुस के न टिक पाने के कारण, पौलुस और बरनबास में बाद मेंं इस बात पर झगड़ा हुआ कि दूसरी मिशनरी यात्रा पर वे उसे अपने साथ रखें या न। साफ है कि पौलुस को काम की सफलता की अधिक चिंता थी जबकि बरनबास को आदमी को बचाने की थी। उन्होंने एक दूसरे से अलग होना चुनकर अपने झगड़े को निपटाया। जिस कारण पौलुस सीलास को साथ लेकर सीरिया की ओर रवाना हो गया और बरनबास मरकुस को लेकर कुप्रुस जाने वाले जहाज में बैठ गया (प्रेरितों 15:37-40)।

मरकुस के निर्णय पर पौलुस को चाहे बहुत गुस्सा था परन्तु अपने भाई के प्रति उसके मन में कोई द्वेष नहीं था। वास्तव में कई सालों बाद मरकुस रोम में पौलुस के साथ काम करते हुए मिलता है (कुलुस्सियों 4:10; फिलेमोन 24)। अंतिम कारावास के दौरान पौलुस ने तीमुथियुस से उसे साथ लेकर आने को कहा था (2 तीमु. 4:11)।

कुलुस्सियों में पौलुस के सलाम में यह संकेत था कि मरकुस बरनबास का भाई लगता था: ‘‘अरिस्तर्खुस जो मेरे साथ कैदी है, और मरकुस जो बरनबास का भाई लगता है (जिस के विषय में तुम ने आज्ञा पाई थी कि यदि वह तुम्हारे पास आए, तो उस से अच्छी तरह व्यवहार करना)’’ (कुलु. 4:10)। KJV में उसे ‘‘बरनबास की बहन का बेटा’’ या भानजा बताया गया है; परन्तु यूनानी शब्द ἀνεψιός (*anepsios*) है, जिसका अर्थ सम्भवतया ‘‘भाई’’ है।[13]

बाइबल का प्रमाण पतरस के मरकुस के आत्मिक पिता होने का संकेत देता है। 1 पतरस 5:13 दोनों के बीच पिता/पुत्र के सम्बन्ध का सुझाव देता है: ‘‘जो बेबीलोन में तुम्हारे समान चुने हुए लोग हैं, वह और मेरा पुत्र मरकुस तुम्हें नमस्कार कहते हैं।’’ ‘‘मेरा पुत्र मरकुस’’ वाक्यांश यह संदेश देता हुआ लगता है कि मरकुस के मनपरिवर्तन के लिए पतरस ही जिम्मेदार था और वही उसका आत्मिक परिपालक बना हुआ था। यहां पर पतरस के साथ मरकुस का होना संकेत देता है कि पतरस के जीवन के अंत के निकट, मरकुस कई अवसरों पर उसके साथ गया।

बाइबल से बाहरी प्रमाण से भी मरकुस और पतरस के बीच बहुत विशेष सम्बन्ध होने की पुष्टि होती है। इरेनियुस ने कहा कि मरकुस ‘‘पतरस का चेला और अनुवादक’’ था।[14] यूसबियुस ने उस परम्परा को लिखा कि मरकुस मिशनरी यात्रा पर मिस्र में भेजा गया पहला इवेंजलिस्ट था, जहां उसने सिकंद्रिया की कलीसिया की स्थापना की[15] और वहां का पहला बिशप बना। जे. एच. फार्मर ने उस परम्परा से बताया कि मरकुस सिकंद्रिया में लगभग 68 ईसवी में शहीद हुआ था।[16]

मरकुस के स्रोतों के सम्बन्ध में एक कठिन सवाल खड़ा होता है कि ‘‘मरकुस को यीशु

के जीवन की जानकारी कहां से मिली?'' क्या उसने वही लिखा जो उसने परमेश्वर की प्रेरणा रहित प्रत्यक्षदर्शियों से सुना या वह वह लिख रहा था जो उसे पतरस तथा अन्य प्रेरितों के द्वारा बताया गया था?

सुसमाचार के अपने विवरण के परिचय में लूका की कही बात इस सवाल को आरम्भ करने वाली बन जाती है। लूका नये नियम का गैर-प्रेरित लेखक था। अपने विवरण की भूमिका में उसने समझाया कि उसने यीशु के अपने विवरण को कैसे और क्यों लिखा:

> बहुतों ने उन बातों का जो हमारे बीच में बीती हैं, इतिहास लिखने में हाथ लगाया है, जैसा कि उन्होंने जो पहले ही से इन बातों के देखनेवाले और वचन के सेवक थे, हम तक पहुंचाया। इसलिये, हे श्रीमान् थियुफिलुस, मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक-ठीक जांच करके, उन्हें तेरे लिये क्रमानुसार लिखूं ताकि तू यह जान ले कि वे बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, कैसी अटल है (लूका 1:1-4)।

इस प्रस्तावना से पता चलता है कि परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों ने अपने लेखों की पृष्ठभूमि के रूप में कई मामलों में खोजबीन का इस्तेमाल किया। लूका यीशु के जीवन का प्रत्यक्षदर्शी नहीं था, परन्तु स्पष्टतया वह वह व्यक्ति था जिस पर पौलुस (या किसी अन्य प्रेरित) ने अपने हाथ रखने के द्वारा उसे आत्मा के प्रकाश वाले दान दिए थे। लूका और प्रेरितों के काम के काम के अपने विवरणों को लिखते समय आत्मा तो उसकी अगुआई कर ही रहा था, फिर भी उसने सुसमाचार के उसके पास उपलब्ध विवरणों तथा अन्य सामग्रियों की और अपने ही शब्दों के अनुसार खोजबीन की।

सुसमाचार के मरकुस के विवरण में लूका में दी गई किसी बात के साथ मिलती जुलती कोई बात नहीं मिलती। फिर भी हमारे पास मरकुस के लेखन के आरम्भ से सम्बन्धित कलीसिया से जुड़े लोगों की काफ़ी गवाहियां हैं। परमेश्वर की प्रेरणा रहित यह जानकारी सुसमाचार के उसके विवरण के महत्वपूर्ण स्रोत की सम्भावित समझ को बढ़ा सकती है।

कलीसिया के इतिहास की संयुक्त साक्षी इस सम्भावना का समर्थन करती है कि मरकुस को अपना ज्ञान पतरस को प्रचार करते सुनने से मिला। इस प्रकार की साक्षी दूसरी सदी के आरम्भ से लेकर चौथी सदी के अंत तक के कलीसिया के इतिहास के लगभग तीन सौ वर्ष पीछे तक जा सकती है। इस प्रकार की साक्षी जितनी एकसमान और सिलसिलेवार होगी उतना ही इसे विश्वसनीय माना जाएगा। बाइबल के विद्वान आम तौर पर यही कहते हैं कि यह साक्षी काफ़ी ठीक और विश्वास दिलाने वाली है।

पतरस और मरकुस के बीच इस सम्बन्ध के गवाह दूसरी सदी के आरम्भ में पपियास[17]; टरटुलियन[18] और तीसरी सदी के आरम्भ में सिकंद्रिया का कलेमेंट,[19] तीसरी सदी के अंत में यूसबियुस; और एपिफेनियुस[20] और चौथी सदी के निकट जेरोम[21] रहा। विवरणों में भिन्नताएं बेशक हैं, परन्तु इन सभी गवाहों का निष्कर्ष था कि एक या दो महत्वपूर्ण ढंगों से मरकुस पतरस पर निर्भर था।

पपियास जो कि इन गवाहों में सबसे पुराना था, ''प्रेसबिटर यूहन्ना'' का चेला था जिसे

न्यायसंगत ढंग से प्रेरित यूहन्ना के रूप में पहचाना जाता है। यह साक्षी मरकुस/पतरस के सम्बन्ध के इस विचार को प्रेरितों के युग यानी उन बारहों में से एक, प्रेरित यूहन्ना के साथ, जो नब्बे से अधिक उम्र का होकर इफिसुस में मरा के साथ जोड़ देती है। पपियास ने यूहन्ना की गवाही इस प्रकार से दी:

> ''मरकुस ने पतरस का अनुवादक बनकर, क्रम में तो नहीं लिखा, परन्तु मसीह की कही या की गई बातें जो भी उसे याद थीं उन्हें उसने बिल्कुल सही-सही लिख दिया। क्योंकि उसने न तो प्रभु से सुना और न उसके पीछे चला, परन्तु बाद में, जैसा कि मैंने कहा, वह पतरस का चेला बना, जिसने उसकी शिक्षा को उसके सुनने वालों की आवश्यकताओं के अनुरूप बदल लिया, परन्तु प्रभु के उपदेशों के उससे सम्बन्धित विवरण को देने के इरादे के बिना, ताकि मरकुस कुछ बातों को जिन्हें उसने याद कर लिया था, लिखते समय कोई गलती न करे। क्योंकि वह एक बात में चौकस था कि जो कुछ उसने सुना था उनमें से किसी बात में गलती न करे, और उनमें से कोई बात गलत न कह दे।''[22]

पपियास की टिप्पणियों में जो कि यूसबियुस के द्वारा लिखी गई हैं, सुसमाचार के अपने विवरण को लिखने के मरकुस के ढंग की सबसे पुरानी प्रचलित गवाही है। बाद की गवाहियां भी इस बात में ऐसी ही थीं कि वे भी इस बात का समर्थन करती हैं कि मरकुस ने पतरस के साथ पक्का सम्बन्ध बनाए रखा।

तो फिर हम इन साक्षियों में से सुरक्षित ढंग से क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं? आरम्भ में, वे एक ठोस निष्कर्ष की पुष्टि करती हैं कि मरकुस सुसमाचार के दूसरे विवरण का लेखक था। इसके अलावा, इनसे यह निष्कर्ष निकालना सुरक्षित है कि किसी न किसी प्रकार से मरकुस पतरस के प्रचार से जुड़ा हुआ था। उसने संदेश को पतरस से सुना और फिर उसे लिख दिया, या पतरस ने मरकुस द्वारा सुसमाचार के अपने विवरण को लिखने के बाद इसे किसी प्रकार से पढ़ा।

परन्तु मरकुस के लेखन और पतरस की मृत्यु से सम्बन्धित समयों पर ये उद्धरण सहमत नहीं हैं। इरेनियुस की *अगेंस्ट हेयरसिस*[23] और मरकुस की मारसियोनाइट विरोधी प्रस्तावना[24] जो कि दोनों 180 ई. के लगभग लिखी गई थीं, सहमत हैं कि सुसमाचार का मरकुस का विवरण पतरस की मृत्यु के बाद सम्भवतया 65 और 68 ई. के बीच लिखा गया। कलेमेंट तथा ओरिगन[25] के लेखों में संकेत मिलता है कि सुसमाचार का यह विवरण पतरस के जीवनकाल में पूरा हुआ और उसके द्वारा अधिकृत किया गया था।[26]

पतरस चाहे मरकुस का मुख्य स्रोत हो, परन्तु वह उसका एकमात्र स्रोत नहीं रहा होगा। मरकुस का घर यरूशलेम में था, इसलिए उसे यीशु को जानने वालों के साथ सीधे सम्पर्क में आने के कई अवसर मिले होंगे, जिन्होंने उसके आश्चर्यकर्मों को देखा था, उसे उपदेश देते हुए सुना था और यहां तक कि उसके पुनरुत्थान के गवाह थे। ग्यारह मूल प्रेरितों मत्तियाह तथा उन स्त्रियों की तरह ही जो यीशु की सेवकाई के गवाह रहे थे, ये लोग मरकुस के लिए सुसमाचार का अपना विवरण लिखते हुए काफ़ी जानकारी देने वाले हो सकते थे। इन सभी मामलों में, उस जानकारी के चयन और इस्तेमाल में जिसे मरकुस ने इकट्ठा करके लिखा, पवित्र आत्मा ने अगुआई की होगी।

इसका प्रभाव

तीन–चार सदियों तक बाइबल के विद्वानों के दायरों में सुसमाचार के मरकुस के विवरण के मत्ती और लूका के साथ सम्बन्ध पर गम्भीर चर्चा होती रही है। कहा जा सकता है कि सुसमाचार के इस विवरण से ''सहदर्शी समस्या'' की चर्चा का आरम्भ हुआ। ''सहदर्शी'' शब्द सबसे पहले जे. जे. ग्रेसबक[27] द्वारा मत्ती, मरकुस और लूका के लिए किया गया (1745–1812)। इस समस्या की मूल चिंता इन तीनों मेल खाते विवरणों का आखिरी सम्बन्ध है। सरल शब्दों में कहें तो प्रश्न यह है कि ''यदि इन्होंने एक–दूसरे की नकल की, तो फिर किसने किसकी नकल की?''

इस प्रश्न का उत्तर देने का एक प्रयास सुसमाचार के तीनों विवरणों की समानताओं को यीशु के सम्बन्ध में बढ़ता ज्ञान माना गया, जो सुसामाचार के प्रत्येक लेखक के पास था। यह विचार सुझाव देता है कि सुसमाचार में इन तीनों लेखकों की पहुंच में सुसमाचार के तथ्य, विवरण, तथा सच्चाइयों का वह सामान्य व्यवहार था जो यीशु के जीवन तथा शिक्षाओं से पक्के तौर पर इकट्ठा हो चुका था। आंकड़ों का यह भण्डार यीशु की सेवकाई, प्रेरितों के प्रचार तथा प्रेरितों के समय में और उसके बाद के वर्षों के दौरान होने वाले आत्मा का दान प्राप्त शिक्षा से मिला था। इन लेखकों ने ज्ञान के इस ढेर से थोड़ा बहुत लिया हो सकता है, उस ढेर से जो उनके सुसमाचार के अपने विवरणों को लिखना आरम्भ करने तक ठोस रूप ले चुका होगा। मरकुस ने उस ''(मसियानिक) या मसीह से सम्बद्ध सच्चाई'' की बुनियादी बात को मिला लिया होगा जो उसे पतरस के प्रचार से मिली थी, और मत्ती और लूका ने भी अपने अपने अनुकूल इसके कुछ भागों का इस्तेमाल किया होगा।

सुसमाचार के तीन विवरणों की समानताओं को समझने का यह प्रयास तर्कसंगत और मानने के योग्य अनुरोध है। इसमें कोई संदेह नहीं कि यीशु की बातों, आश्चर्यकर्मों, उपदेशों, मृत्यु और पुनरुत्थान का एक विस्तृत भण्डार पहली सदी के दूसरे भाग और दूसरी सदी के पहले भाग के दौरान उपलब्ध था। यीशु से सम्बन्धित परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए प्रचार के द्वारा यह आरम्भिक चेलों की शिक्षा साबित हो चुकी गवाही थी और इसे परमेश्वर के प्रबन्ध के द्वारा अगुआई देकर भविष्य के लिए सम्भाला गया। सुसमाचार के तीनों लेखकों ने इसी सच्चाई से लिया जिस कारण सुसमाचार के उनके विवरण बहुत सी जगहों पर और महत्वपूर्ण ढंगों से एक–दूसरे के समानांतर हैं।

सुसमाचार के तीनों विवरणों की समानता को समझने का एक और प्रयास यह विचार है कि इसे आम तौर पर ''दो दस्तावेज़ों वाली अवधारणा'' कहा जाता है। संक्षेप में, विचार यह है कि मत्ती और लूका ने सुसमाचार के अपने विवरणों में मरकुस का अधिकतर भाग मिला लिया क्योंकि इसे सुसमाचार के उस संदेश से लिया गया जो पतरस ने सुनाया था। इसके अलावा सुसमाचार के दो और सहदर्शी विवरण, मत्ती और लूका किसी और दस्तावेज़ से लिए गए हो सकते हैं जिसका नाम अलग था परन्तु इन्हें हमारे उद्देश्यों के लिए, ''एक और स्रोत'' नाम दे दिया गया। अनुमान लगाया जाता है कि यह विवरण परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई प्रेरितों की तथा कलीसिया की शिक्षाओं से और शायद उद्धारकर्त्ता के उपदेशों तथा प्रवचनों के संग्रह *लोगिया ऑफ़ जीज़स* से लिया गया होगा। इन उपलब्ध सामग्रियों से वह जानकारी भी मिल पाई होगी जो

मत्ती, मरकुस, लूका ने भी ली होगी, और मरकुस की अपेक्षा मत्ती और लूका ने इस जानकारी का इस्तेमाल खुलकर किया।

इस दूसरे ढंग में कुछ आकर्षण और वैधता भी है। परन्तु दोनों विचारों में न मिलने वाला महत्वपूर्ण तत्व उसका जो वास्तव में हुआ, ठोस प्रमाण है। प्रत्येक थ्योरी में प्रश्न हैं, जिनके हमारे पास विश्वसनीय उत्तर नहीं हैं।

हम जो भी मानना चाहते हैं या मानते हैं, हमें यह तो मानना पड़ेगा कि सही–सही ढंग से यह जानना असम्भव है कि परमेश्वर ने सुसमाचार के विवरण कैसे दिए। लूका की बात कि उसने सुसमाचार के अपने विवरण को लिखने से पहले खोजबीन की, सुसमाचार के विवरणों के लिखे जाने की दो सच्चाइयों की पुष्टि करता है। पहला, यह बताता है कि सुसमाचार की सामग्री उसके पास थी और यह कि उसने उसका इस्तेमाल किया। दूसरा, अनुमान से, लूका की बात से पता चलता है कि पवित्र आत्मा ने सुसमाचार के चारों विवरणों को लिखने के लिए अन्य स्रोतों का इस्तेमाल किया। उस दौरान हमारे यह विचार करते हुए कि मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना ने सुसमाचार के अपने विवरणों को कैसे लिखा, सुसमाचार के लिखे जाने के लिए दूसरों के लेखों को पढ़ने और खोज करने की बात हमारे लिए सहायक है।

यह तय करने के लिए कि सुसमाचार के इन तीनों विवरणों की समानता कैसे बनी, और कई थ्योरियां बताई गई हैं, परन्तु कोई भी विचार उन सभी प्रश्नों के उत्तर नहीं देता जो इस घटना पर उठ सकते हैं। इस प्रश्न में परमेश्वर की वफ़ादारी का आना आवश्यक है। यह इस बात की मांग करती है कि अंत में हमें इस प्रकार की खोज को उसके हाथों में देकर सुसमाचार के विवरणों के लिखे जाने की बात उसके उद्देश्यों के लिए बेहतरीन तरीके से और उन लोगों के हित्त के लिए जो उद्धार के लिए मसीह में विश्वास लाना चाहते हैं अपने हिसाब से करने के लिए उस पर भरोसा रखे। आर. सी. एच. लैंसकी की इस चर्चा की समीक्षा उस विशेष बल का ध्यान दिलाती है जिसे ध्यान में रखना आवश्यक है:

> इन गवाहों [सुसमाचार के लेखकों] को आत्मा की प्रतिज्ञा भी थी, यूहन्ना 14:26; 16:14. अपनी व्याख्यों में हम इस ईश्वरीय अगुआई तथा नियन्त्रण को निकाल नहीं सकते कि सुसमाचार के विवरण कैसे लिखे गए। शुद्ध रूप में हर प्रकृतिवादी व्याख्या आरम्भ से ही नाकाम होती है? सुसमाचार का हर विवरण आत्मा के नियन्त्रण के बिना, और अपने आप में एक अकथनीय घटना के रूप में खड़ा है। इन्हें बनाया नहीं जा सकता था। परन्तु वे बने हैं और हमारे ध्यान में मन को हर लेने वाली खामोशी से बड़ी शान से खड़े हैं। आत्मा उनके समर्थन में है। उसने इन तीनों लेखकों का इस्तेमाल या, प्रत्येक को जैसा वह था लेकर, उस सारी योग्यता के साथ और जो जो साधन उनके पास थे, उसे लेकर हर किसी को अपने ही तरीके से लिखने के योग्य बनाया, ताकि लेखनी वह बन जाए जो हर आने वाले युग में कलीसिया के लिए आत्मा ने चाहा था कि हो। कोई आश्चर्य नहीं कि इस प्रकार से परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया हर लेख अपने आप में अलग खड़ा है, जो अन्य सब लेखों से श्रेष्ठ है और सदा के लिए उस पर ईश्वरीय होने की मोहर लगी है।[28]

इसका समय

सुसमाचार के मरकुस के विवरण का विमोचन पतरस की मृत्यु के बाद हुआ होगा। यह सम्भावना इरेनियुस की अपनी पुस्तक *अगेंस्ट हेयरसिस* में उसकी टिप्पणी के आधार पर है कि ''पतरस और पौलुस की विदाई (कूच) के बाद, पतरस के चेले और अनुवादक, मरकुस ने ही हमें लिखित में वे चीज़ें दीं, जिनका प्रचार पतरस के द्वारा किया गया था।''[29] यदि इरेनियुस के शब्द ''विदाई'' का अर्थ मृत्यु है और यह कि आम तौर पर माना जाता है, पतरस 67 या 68 ई. के लगभग शहीद हो गया, तो मरकुस के लिखे जाने का 68 और 69 ईसवी के लगभग होगा। यह तिथि न्यायसंगत और विचार किए जाने के योग्य लगती है।

इरेनियुस ने जहां कहा कि मरकुस को ''पतरस और पौलुस की विदाई के बाद'' लिखा गया, वहीं सिकंद्रिया के क्लेमैंट ने कहा कि मरकुस ''रोम में पतरस के प्रचार के बाद'' लिखा गया। ये दोनों गवाहियां चाहे विशेष बातों से एक-दूसरे से सहमत नहीं लगती हैं, परन्तु वे मरकुस के 60 के दशक के अंत में लिखे जाने से सहमत हैं। ये गवाहियां मरकुस का समय 50 के दशक का नहीं बल्कि 60 के दशक का होने का संकेत देती हैं।

फार्मर ने इस चर्चा को नये नियम में सुसमाचार के विवरणों को पहले क्रम से पहले के साथ जोड़ा:

> सुसमाचार के हमारे विवरणों का क्रम [नया नियम] सम्भवतया आरम्भिक विश्वास के कारण है कि यह उसी क्रम में है जिसमें सुसमाचार के विवरण लिखे गए। परन्तु यह भी क्रम में नहीं। क्रम का प्रश्न तभी उठा जब लपेटवीं पत्री के स्थान पर कोडेक्स यानी हमारी वर्तमान पुस्तक रूप आ गया। वह बदलाव [तीसरी सदी] में चल रहा था। ओरिगन ने क्रम [यूहन्ना, मत्ती, मरकुस, लूका] के साथ कोडिसस का पता लगाया, जो कि सम्भवतया प्रेरितों को प्रमुख स्थान देने की इच्छा से था। वह और आज मिलने वाले एक और सामान्य को दो मुख्य समूह माना जा सकता है जिसमें एक पद के क्रम में जबकि दूसरा समय के क्रम में है। पहले वाला [मिस्री और लातीनी] है जबकि दूसरे में [यूनानी हस्तलेखों] तालिकाओं तथा पूर्वजों का अधिक प्रभुत्व है, और इसे पुराने [सीरियाई हस्तलेख] का समर्थन है।
>
> परन्तु इनके अंतर, भिन्नताएं हैं।... [मरकुस] कभी पहले नहीं है; जब यह [लूका] के बाद आता है, तो समय के विचार ने उसे लम्बाई की जगह दे दी।[30]

कलीसिया के इतिहास में आरम्भिक गवाही में भरोसा यह तर्क देगा कि मरकुस के समय को 70 ईं. में यरूशलेम के विनाश से पहले के अंतिम पांच वर्षों में से किसी में रखा जाए।

हाल के अधिकतर विद्वानों ने, भाषाविदों तथा तुलनात्मक अध्ययनों के आधार पर लगभग न बदलने वाले ढंग से, निष्कर्ष निकाला है कि मरकुस को मत्ती या लूका से पहले लिखा गया। उनका विचार कि मरकुस को इन दोनों पुस्तकों से पहले लिखा गया, उन आपसी सम्बन्धों पर आधारित है जो उनका मानना है कि मरकुस, मत्ती और लूका में थे।

सुसमाचार के इन तीनों विवरणों की समानताओं से कोई इनकार नहीं कर सकता, परन्तु पक्का कहना कठिन है कि वे समानताएं कैसे बनीं। हमारे साथ चिढ़ाने वाला एक प्रश्न बना रहता

है: "क्या वे एक-दूसरे पर निर्भर थे, क्या उन्होंने एक ही स्रोत का इस्तेमाल किया, या उन्होंने कई सामान्य स्रोतों का इस्तेमाल किया?"

ऐसा लगता नहीं है कि हम इस पर निर्णायक बात कह सकते हैं कि सुसमाचार पहले केवल भाषाविदों तथा तुलनात्मक अध्ययनों से प्राप्त हुआ। परन्तु जो मुख्यतया इन अध्ययनों पर निर्भर रहने वाले विद्वान हैं आम तौर पर मरकुस को सुसमाचार के अन्य दोनों विवरणों से थोड़ा पहले, शायद 50 के दशक का बताते हैं। मरकुस की इस पहले वाली स्थिति का विकल्प देने वाली विद्वता दूसरी और तीसरी सदियों के कलीसिया के इतिहास के प्रमाण को अनदेखा कर देती है या इसकी व्याख्या फिर से करती है जो मसीह की पुस्तक के पहले होने का सुझाव देते हैं।

द फ़ोर गॉस्पल्स: ए स्टडी ऑफ़ ओरिजिन में बर्नट हिलमैन ने मरकुस के पहले होने के एक प्रमाण की मानक समीक्षा की।[31] द *सिनोप्टिक प्रॉब्लम* में विलियम फार्मर ने इस स्थिति को कि मरकुस पहले लिखा गया, मत्ती के पहले लिखे होने का दावा करते हुए, गम्भीर और विद्वतापूर्वक चुनौती दी।[32]

इसका उद्देश्य

सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण में यहां स्पष्ट उद्देश्य कथन है (यूहन्ना 20:30, 31), मरकुस में इसके लिखे जाने का कोई स्पष्ट कारण नहीं दिया गया। इस विवरण का आरम्भिक शब्द, "परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ" (1:1), यीशु के जीवन की इस प्रस्तुति के इरादे की बात के बहुत निकट है। इन आरम्भिक शब्दों में केवल यही संकेत है कि पुस्तक पृथ्वी की यीशु की सेवकाई का सम्पूर्ण विवरण देने के उद्देश्य से लिखी गई।

उन विशेषताओं के कारण जो सुसमाचार के इस विवरण में दिखाई देती हैं, हम तर्कसंगत रूप में कह सकते हैं कि मरकुस सामान्य रूप में अन्यजाति पाठकों के लिए और विशेष रूप में रोमी पाठकों के लिए लिखी गई। इस विचार को इरेनियुस,[33] सिकंद्रिया के क्लेमैंट,[34] जेरोम,[35] तथा ऐसे और लोगों के बाहरी प्रमाण का ही नहीं बल्कि भीतरी प्रमाण का भी समर्थन है।

सुसमाचार का मरकुस का विवरण यीशु को एक दीन सेवक के रूप में दिखाता है। जो बातें करने के बजाय काम करने वाला व्यक्ति है। इसी कारण यीशु के जीवन तथा सेवकाई की इस पुस्तक में, यीशु की शिक्षाएं नहीं बल्कि उसके काम प्रमुखता से मिलते हैं।

परन्तु मरकुस में दिखाया गया यीशु परमेश्वर पुत्र भी था। वह सचमुच में मनुष्य था, और फिर भी, वह पूरी तरह से परमेश्वर का पुत्र था। उसे साफ़ साफ़ स्वर्ग की ओर से परमेश्वर का पुत्र स्वीकारा गया: "यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो!" (9:7)। उसने आंधी को डांटा जो कि केवल परमेश्वर का पुत्र ही कर सकता था: "शांत रह, थम जा!" (4:39)। यहां तक कि दुष्ट आत्माओं ने भी उसके परमेश्वर होने की पुष्टि की: "हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नष्ट करने आया है? मैं तुझे जानता हूं, तू कौन है? परमेश्वर का पवित्र जन!" (1:24)।

इन दावों के अलावा, यीशु ने स्वयं सब्त का प्रभु होने की घोषणा की (2:28) और आश्चर्यकर्मों की शक्ति के साथ दिखाया कि वह पापों को क्षमा कर सकता है (2:10-12)। उसने अपनी स्वयं की मृत्यु तथा पुनरुत्थान की पेशनगोई की (10:33, 34) और बताया कि उसकी मृत्यु में सब लोगों के लिए छुड़ाने की सामर्थ थी: "क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं

आया कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे'' (10:45)।

मरकुस के विवरण का आरम्भ यीशु के पुत्र होने की अभिपुष्टि ''परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ'' के साथ होता है और इसमें अंत के निकट एक रोमी सिपाही की ऐसी ही एक पुष्टि मिलती है कि ''सचमुच, यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था!'' (15:39)। पुत्र परमेश्वर की ओर से भेजा हुआ सेवक बन गया ताकि वह संसार का परमेश्वर का भेजा हुआ उद्धारकर्त्ता बन सके।

जहां जहां प्रभु के कहे शब्द हैं उन्हें छोड़कर, पुराने नियम के उद्धरणों का सामान्य रूप में न होना सुसमाचार के मरकुस के विवरण की अन्यजाति/रोमी पहुंच का प्रमाण है। मरकुस 1:2, 3 केवल उपवाद हो सकता है, क्योंकि 15:28 की प्रमाणिकता पर संदेह किया जाता है क्योंकि यह कुछ हस्तलेखों में नहीं मिलता।

''बुअनरगिस'' (3:17); ''तलीता कूमी'' (5:41); ''बरतिमाई'' (10:46); ''अब्बा'' (14:36); और ''इलोई, इलोई, लमा शबक्तनी'' (15:34) अरामी भाषा शब्दों तथा अभिव्यक्तियों की व्याख्या से साफ पता चलता है कि किन पाठकों को ध्यान में रखा गया। यहूदी रस्मों की व्याख्या (उदाहरण के लिए देखें, 7:2-4, 11; 15:42) और जैतून पहाड़ के भौगोलिक विवरण से (13:3), जो यहूदियों के लिए अनावश्यक होना था, की व्याख्या अन्यजाति/रोमी उद्देश्य को बताती है।

अन्यजाति/रोमी पाठकों का ध्यान में होना मरकुस के *speculator* (सिपाही, ''जल्लाद''; 6:27); *sextarius* (''मटके''; 7:4); *quadrans* (दमड़ियां, ''सिक्के''; 12:42; देखें NKJV), और *centurio* (''सूबेदार''; 15:39, 44, 45) जैसे लातीनी शब्दों के इस्तेमाल से भी संकेत मिलता है जो कि सुसमाचार के अन्य विवरणों में नहीं मिलता। कई लातीनी शब्द सुसमाचार के मरकुस के तथा अन्य विवरणों में मिलते हैं: *grabatus* (''खाट''; 2:4); *census* (12:14); *flagellare* (''कोड़े लगवाए''; 15:15); और *Praetorium* (''प्रीटोरियुम''; 15:16)।

ऊपर दी गई शब्दावली के सुसमाचार के मरकुस के सारे लहजे को जोड़ा जाना आवश्यक है, जो कि विशेष तौर पर रोमी सोच को आकर्षित करता होगा, वैसे ही जैसे मत्ती के विवरण ने इब्रानी सोच को और लूका के विवरण ने यूनानी सोच को आकर्षित किया होगा। यदि मरकुस ने रोम में काफी समय बिताया तो उसने रोमी सोच के लिए सुसमाचार के इस विवरण को लिखने के लिए अपने आपको आदर्श माहौल में पाया होगा।

इसकी विशेष बातें

मरकुस *गतिविधि और ऊर्जा* पर बल देता है। डब्ल्यू. ग्राहम सक्रोजी ने इस पुस्तक के लिए मुख्य शब्द के रूप में ''सेवकाई'' शब्द को चुना और लिखा कि यह यीशु को ''सेवक'' के रूप में दिखाती है।[36] मरकुस में यीशु के केवल दो उपदेश और केवल चार दृष्टांत हैं। इसके विपरीत इसमें बीस आश्चर्यकर्मों की बात है जिनमें से दो केवल इसी पुस्तक में हैं।[37] यीशु को परमेश्वर के कर्मचारी के रूप में दिखाया गया है, जिसे तूफ़ानों, दुष्टात्माओं, बीमारी तथा मृत्यु

पर शक्ति वाले के रूप में दिखाया गया है। मत्ती ने जहां उपदेशों की बात की वहीं मरकुस ने कामों को लिखा है।

मरकुस 8:27–30 सुसमाचार के इस विवरण का मुख्य वचन है। कैसरिया फिलिप्पी की यह घटना सुसमाचार के विवरण के दो भागों को जोड़ देती है। पहला भाग यीशु की सेवकाई के कामों और शिक्षाओं से सम्बन्धित है। दूसरे भाग में उसकी शिक्षाओं की विषय–सूची चेलों की ओर अधिक मुड़ जाती है। वह उन्हें सिखा रहा था कि मसीह के लिए परमेश्वर की इच्छा यह थी कि अपने दु:ख सहने के द्वारा वह संसार का उद्धारकर्त्ता बने।

''तुरन्त'' मरकुस का मुख्य शब्द है। यूनानी शब्द εὐθύς (*euthus,* का अर्थ ''झटपट'' या ''सीधे''; KJV) पुस्तक में इक्तालीस बार मिलता है। तुलना के हिसाब से, मत्ती में यह शब्द केवल पांच बार, लूका में एक बार, और यूहन्ना में तीन बार मिलता है।[38] मरकुस एक असाधारण फासला बनाता है। केवल मरकुस ही यीशु को इतना व्यस्त दिखाता है जिसे खाना खाने का समय नहीं था (3:20; 6:31)। मरकुस की पुस्तक यीशु को देते हुए सिखाती है; परन्तु, उसकी गतिविधियों पर ज़ोर देते हुए यह उसकी शिक्षाओं के बारे में अधिक नहीं लिखती (1:21, 39; 2:2, 13; 6:2, 6, 34; 10:1; 12:35)।

मरकुस यीशु की वंशावली तथा जन्म को छोड़ देता है और उसकी *सेवकाई* पर फोकस करता है। यूहन्ना की सेवकाई की संक्षिप्त समीक्षा के बाद, पुस्तक एकदम से 1:14 में यीशु की सार्वजनिक सेवकाई पर पहुंच जाती है। मरकुस में यीशु के जीवन का परिचय केवल 13आयतों का है। इस तथ्य की तुलना मत्ती के 76 आयतों वाले परिचय, और लूका के 183 आयतों वाले परिचय से की जाए।

सुसमाचार का यह विवरण *दुष्टात्माओं पर यीशु की सामर्थ* पर ज़ोर देता है।[39] सुसमाचार के किसी भी अन्य विवरण से बढ़कर, दुष्टात्माओं को यीशु के अधीन दिखाया गया है। रोमियों को अपने बड़े विजेताओं की वंशावली की कोई परवाह नहीं होती थी। वे उनके कारनामों के बारे में जानने के इच्छुक होते थे। यीशु के बारे में उनका प्रश्न यह नहीं होता होगा कि ''वह कहां से आया?'' बल्कि यह रहता होगा कि ''उसने क्या किया?'' उदाहरण के लिए, यह बताते हुए कि यीशु ने सबके सामने आराधनालय में एक आदमी में से अशुद्ध आत्मा को निकाला (1:23–27) और दो जंगली आदमियों का सामना किया जो कब्रों में रहते थे और उनमें से दुष्टात्माओं को निकाला (5:2–20)। इस प्रश्न के प्रभावशाली उत्तर देता है। उसने अपने प्रेरितों को वचन दिया कि आने वाली उनकी सेवकाइयों में उनके पास उसकी सामर्थ होनी थी:

> विश्वास करनेवालों में ये चिह्न होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राण नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे (16:17, 18)।

मरकुस की भाषा से उस *आश्चर्य* का पता चलता है जो लोगों को यीशु के कामों को देखकर हुआ। लोगों ने अचम्भे और भय के साथ यीशु के कामों को देखा (1:27; 2:12; 4:41)।

मरकुस की लगभग हर बात बड़े विस्तार से बताई गई है। लेखक किसी पेंटर, या कलाकार की तरह था जिसने रंग की हर बारीकी पर ध्यान दिया। उसने जंगल में ''वन पशुओं'' (1:13),

पांच हज़ार पुरुषों को खिलाने में ''हरी घास'' (6:39, 40), और यीशु के कपड़ों को इतना साफ़ देखा जो इतने उज्ज्वल थे कि ''पृथ्वी पर कोई धोबी भी वैसा उज्ज्वल नहीं कर सकता था'' (9:3)। उसने यीशु को बच्चों को अपनी गोद में लेते हुए (9:36), और धनवान, जवान हाकिम के उसके साथ भागकर आने और उसके सामने घुटने टेकने को दिखाया (10:17)।

ईश्वरीय कहानी के भागों पर ज़ोर देते हुए मरकुस कई बार *दोहराव* का इस्तेमाल करता है। पुस्तक में समानांतर वाक्यांशों के साथ विचारों को फिर से कहकर यीशु के कामों पर ज़ोर दिया गया है। उदाहरण के लिए शुद्ध हुआ आदमी ''इस बात का बहुत प्रचार करने और फैलाने'' (1:45) के लिए बाहर चला गया; अच्छा बीज ''उगा और बढ़कर फलवंत हुआ'' (4:8); और अपने इनकार में पतरस ने दावा किया, ''मैं न ही जानता और न ही समझता हूं कि तू क्या कह रही है'' (14:68)।

इसका निष्कर्ष

मरकुस 16:9-20 नये नियम की वचन की बड़ी समस्याओं में से एक है। बारह आयतों वाले इस वचन से सम्बन्धित बड़ा प्रश्न स्पष्ट है कि ''क्या यह मूल में मरकुस के अंत में था या नहीं?'' इसका अर्थ यह हुआ कि प्रश्न यह नहीं है कि ''क्या मरकुस 16:9-20 बाइबल का प्रामाणिक अंश है या नहीं?''

बहुत कम लोग हैं जो इस वचन की बातों के परमेश्वर की प्रेरणा से होने को नकारते हों। सुसमाचार के विवरणों, प्रेरितों के काम, तथा नये नियम अन्य पुस्तकों से इसके हर भाग की पुष्टि हो सकती है।

वास्तविक प्रश्न जिस पर बात की जानी आवश्यक है वह वह प्रश्न है जिसका निश्चितता के साथ उत्तर देना कठिन है: ''सुसमाचार के मरकुस के विवरण का अंत इसके लेखक की ओर से कैसा आया?'' नये नियम के यूनानी लेख के सभी महत्वपूर्ण संस्करणों में किसी न किसी प्रकार से संकेत दिया गया है कि इस पर संदेह है कि यह वचन, मरकुस 16:9-20, मरकुस की मूल पुस्तक का भाग था या नहीं। परन्तु सभी यूनानी हस्तलेख अंत में लम्बे हैं; यानी 1,600 से अधिक सभी यूनानी हस्तलेखों में यह शामिल है।

मुख्य कारण कि बहुत से यूनानी लेखों में मरकुस के इतना लम्बा होने की बात पर संदेह यह तथ्य है कि कोडेक्स वेटिकेनस (लगभग ई. सन 325) और कोडेक्स सिनेटिकुस (लगभग इ. सन 350), और सबसे पुराने और उसके बाद के सबसे पुराने यूनानी हस्तलेखों में जो हमारे पास हैं, मरकुस के लेखों का लम्बा अंत नहीं है।

फिर भी, इस मामले को खत्म हुआ मानने से पहले, याद रखें कि इन दो हस्तलेखों में से एक, वेटिकेनस में किसी प्रकार के अंत के लिए मरकुस के अंत में खाली जगह छोड़ी गई है; और स्पष्टतया किसी कारण, सिनेटिकुस में मरकुस का अंत एक पेज छोड़कर किया गया है।

इसके अलावा हमें इस तथ्य पर भी ध्यान देना आवश्यक है कि इरेनियुस (लगभग 180 इ. सन) ने अपनी पुस्तक *अगेंस्ट हेयरसिस* मरकुस 16:19 को उद्धृत किया।[40] टेटियन (लगभग ई. 175) ने दूसरी सदी में मरकुस 16:15-20 को शामिल किया।[41] तीसरी सदी में हिपोलिटुस[42] ने मरकुस 16:19 के शब्द इस्तेमाल किए। उन्होंने न केवल मरकुस 16:9-20 से उद्धृत किया,

बल्कि वे इन उद्धरणों का इस्तेमाल पवित्र शास्त्र के रूप में करते हुए भी लगे।

इन लेखकों की बातों से, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि यह वचन कम से कम दूसरी सदी के आरम्भ तक, शायद मरकुस के लिखे जाने से लगभग पांच सौ वर्षों तक, सुसमाचार के मरकुस के विवरण की कुछ प्रतियों में शामिल था। यदि हमारे पास वे हस्तलेख ही होते जिनसे उन्होंने उद्धृत किया, तो हम इस प्रश्न का उत्तर और दृढ़ता से देने की बेहतर स्थिति में हो सकते थे।

इस जांच में एक और बात जोड़ी जानी आवश्यक है। मरकुस के और अंतिम भाग प्राचीन हस्तेलखों में मिलते हैं। जैक पी. लुई ने इन अंतिम भागों की सूची संक्षेप में दी:

> जैसा कि देखा जा सकता है ... मरकुस के हस्तलेखों का अंत छह प्रकार से होता है: (1) वेटिकेनस, सिनेटिकुस तथा कुछ संस्करणों तथा चर्च फादर का प्रमाण आयत 8 में *ephobunto gar* ("क्योंकि वे डरती थी") के साथ खत्म होता है। (2) चार बृहदक्षर लिपि के हस्तलेखों और उस संस्करणों में स्थान छोड़ा गया है, कुछ जोड़ा गया है जिसे आयत 8 के बाद का संक्षिप्त अंत कहा गया है, स्थान छोड़ा गया है, और फिर आयतें 9 से 20 के साथ आगे बताया गया है। हस्तलेख 274 में आयतें 9 से 20 हैं जिसमें पहले उसके बाद छोटा अंत है। (3) आयत 8 के बाद छोटे अंत K के साथ पुराना लातीनी K से ही खत्म होता है। (4) अलगजेंड्रिनुस, इफेमी, बेज़े, कुछ संस्करणों तथा कुछ चर्च फादर्स सहित हस्तलेखों के समूह में ही आयतें 9 से 20 शामिल हैं। वचन की किस्में जिन्हें TR और MT के रूप में जाना जाता है इस श्रेणी को दर्शाती हैं। (5) कई बहुत कम हस्तलेखों में चाहे लम्बा अंत है, यह दिखाने के लिए कि यह संदेह के घेरे में था आकर इसे तारे के चिह्न, ओबेली या आलोचनात्मक टिप्पणी बना देते हैं। (6) लम्बे अंत के अंदर जोड़ी गई बात जिसका जेरोम को पता था और अब *Freer Logion* के रूप में मौजूद है, 1906 में प्रकाश में आई और पांचवीं सदी के वाशिंगटन के सुसमाचारों में देखने को मिलती है।[43]

यह सूची देने के बाद, लुई ने सम्भावित अंतों को तीन तक समेट दिया: "[1] मरकुस ने मूल में *ephobunto gar* के साथ समाप्त किया; [2] सुसमाचार के विवरण के साथ एक दुर्घटना हुई जिसमें मूल का अंतिम भाग खो गया जिसका कोई पता नहीं; [3] या फिर लम्बे अंत वाली बात (आयतें 9-20) प्रामाणिक अंत है।"[44]

कोई ऐसे सवाल खड़ा कर सकता है जिनका उत्तर हम इस समय नहीं दे सकते। क्योंकि हमारे पास हस्तलेख का प्रमाण नहीं है जो उन उत्तरों के लिए आवश्यक है। परन्तु परमेश्वर के ईश्वरीय प्रबन्ध पर पूरी तरह से निर्भर होकर हम आसानी से इस निर्णय के साथ सहमत हो सकते हैं जो जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे द्वारा एक सौ पचास से कुछ अधिक वर्ष पहले इस विषय का अच्छी तरह से अध्ययन करने के बाद घोषित किया गया था: "हमारा अंतिम निष्कर्ष यह है कि यह वाला वचन हर प्रकार से प्रामाणिक है, और यह संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि इसे उसी हाथ से लिखा गया था जिसने इस विवरण के पहले भागों को [लिखा]।"[45]

निश्चय ही मरकुस 16:9-20 बहुत से महत्वपूर्ण हस्तलेखों में यहां पर बंद नहीं हुआ होना

था और आरिम्भक कलीसिया के इतिहास के आत्मिक अगुओं में बड़ा नाम नहीं होना था, जब तक यह वह ईश्वरीय वचन न होता जिसके द्वारा परमेश्वर चाहता था कि हम चलें।

इसकी रूपरेखा

नीचे दी गई रूपरेखा से यीशु की सेवकाई के बहाव का पता चलेगा। ८:38 में सुसमाचार का यह विवरण एक महत्वपूर्ण मोड़ पर आता है। यहीं पर यीशु ने यरूशलेम की अपनी आने वाली यात्रा के बारे में अपने प्रेरितों तथा चेलों को सिखाना आरम्भ किया जहां उसे गिरफ्तार करके क्रूस पर चढ़ाया जाना था।

I. तैयारी का समय (1:1–13)
II. यीशु की सार्वजनिक सेवकाई: अपने चेलों को बुलाने से लेकर पतरस के अंगीकार तक कि वह मसीह है (1:14–8:38)
III. यीशु की सार्वजनिक सेवकाई जारी: रूपांतर से लेकर यरूशलेम में उसके विजयी प्रवेश तक (9:1–11:11)
IV. यरूशलेम में यीशु की निरंतर शिक्षा (11:12–14:31)
V. गतसमनी में यीशु की प्रार्थनाएं और उसका विश्वासघात और गिरफ्तारी (14:32–52)
VI. यीशु की पेशियां और पतरस के इनकार (14:53–15:20)
VII. यीशु का क्रूसारोहण और दफ़नाया जाना (15:21–47)
VIII. यीशु का पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण (16:1–20)

टिप्पणयां

[1]इरेनियुस *अगेंस्ट हेयरसीस* 3.1.1. [2]अगस्टिन *हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* 1.2.4. [3]हेनरी बार्कले स्वेटे, *कॉमैंट्री ऑन मरकुस* (*मूल में द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मरकुस* [लंदन: मैक्मिलन, 1913]; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगेल पब्लिकेशंस, 1977), xxxii. [4]यह गिनतियां अकॉर्डेंट®9 बाइबल सॉफटवेयर, © 2012, ओक ट्री सॉफ़्टवेयर, Inc. पर आधारित हैं। [5]मरकुस में मिलने वाले विशेष वचनों में निम्न वचन शामिल हैं 3:21 (उसके अपने लोगों की चिंता); 4:26–29 (उगने वाले बीज का दृष्टांत); 7:31–37 (बहरा और गूंगा आदमी); 8:22–26 (अंधा आदमी); 13:34–37 (जागते रहने की ताड़ना); और 14:51 (नंगा भाग जाने वाला जवान)। इसके अलावा मरकुस सुसमाचार के अन्य विवरणों से अलग कुछ क्षेत्रों में और विवरण देता है; देखें 6:14–29 (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु); 7:1–23 (बिना हाथ धोए खाने पर); 9:14–29 (दुष्टात्मा से ग्रस्त लड़का); 12:28–34 (सबसे बड़ी आज्ञा)। (*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* सम्पा. जेम्स ऑर [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एडज़्मैंस पब्लिशिंग कं., 1939], 3:1987–88 में जे. एच. फार्मर, ''मरकुस, द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू'' से लिया गया।) जॉन सी. हॉकिंस के अनुसार, मरकुस में विशेष तौर पर पाई जाने वाली आयतों की संख्या लगभग पचास है। (टू जॉन सी. हॉकिंस, *होराये सिनोप्टिके: कॉन्ट्रिब्यूशंस टू द स्टडी ऑफ़ सिनोप्टिक प्रॉब्लम,* 2रा संस्करण [ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस, 1909], 9)। [6]*ए होमेलेटिक ऐंड इलस्ट्रेटिव ट्रेशरी ऑफ़ रिलिजियस थॉट,* अंक. 6, सम्पा. एच. डी. एम. स्पेंस, जोसेफ एस. एक्सेल, ऐंड चार्ल्स नील (लंदन: आर. डी. डिकिन्सन, 1889), 450 में जेम्स आई. मॉरिसन, ''हिज़ स्टाइल ऐज़ ए राइटर।'' [7]राल्फ अरल, *मरकुस: द गॉस्पल ऑफ़ एक्शन* (शिकागो: मूडी प्रेस, 1970), 9. [8]मेर्विन आर. विनसेन्ट, *वर्ड स्टडीज़ इन द न्यू टैस्टामैंट,* अंक. 1 (न्यू यॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर्स संस, 1887), 156. [9]हॉकिंस, 144–48. [10]डेनियल बी. वालेंस, *ग्रीक ग्रामर बियॉन्ड द बेसिक्स* (ग्रैंड रैपिड्स,

मिशिगन: ज़ौंडरवन, 1996), 526.

[11]देखें प्रेरितों 12:12, 25; 15:37, 39; कुलुस्सियों 4:10; 2 तीमुथियुस 4:11; फिलेमोन 1:24; 1 पतरस 5:13. [12]डब्ल्यू एम. एम. रामसे, सेंट *पॉल द ट्रैवलर ऐंड द रोमन सिटीजन* (लंदन: होडर और स्टॉटन, 1897; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1962), 71. [13]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट ऐंड अदर अरली क्रिश्चियन लिट्रेचर,* 3रा संस्क., संशो. एंव सम्पा. फ्रेड्रिक विलियम डेंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस 2000), 78. [14]इरेनियुस *अगेंस्ट हेयरसिस* 3.1.1. [15]यूसबियुस *एक्लेस्यिस्टिकल हिस्टरी* 2.16.1. [16]फार्मर, 3:1987. [17]आज चाहे पपियास के लेख विद्यमान नहीं हैं, परन्तु यूसबियुस ने उसे मरकुस को ''पतरस का अनुवादक'' कहकर उद्धृत किया (यूसबियुस *एक्लेस्यिस्टिकल हिस्टरी* 3.39.15)। [18]टरटुलियन *अगेंस्ट मैरिक्रॉन* 5. [19]यूसबियुस ने सिकंद्रिया के क्लेमैंट की एक लुप्त हो चुकी पुस्तक से उद्धृत किया जिसमें इस प्रकार से कहा गया है: ''हर प्रकार की विनतियां और निवेदन करते हुए उन्होंने पतरस के एक चेले मरकुस से, जिसका सुसमाचार उपलब्ध है, विनती की कि वह उन्हें शिक्षा की कोई लिखित निशानी दे जो उन्हें मौखिक रूप में बताई गई थी। वे तब तक विनती करने से नहीं रुके जब तक उन्हें इस आदमी को मना नहीं लिया और इस प्रकार से वह लिखित सुसमाचार जो मरकुस के नाम से है मिल गया। और कहते हैं कि पतरस को, आत्मा के प्रकाशन के द्वारा जो हुआ था उसका पता चलने पर, लोगों के जोश से प्रसन्नता हुई और यह कि कलीसियाओं में इस्तेमाल किए जाने के लिए उसके अधिकार की अनुमति मिल गई। *हिपोटाइपोसस* की अपनी आठवीं पुस्तक में क्लेमैंट यह विवरण देता है और पपियास नाम के थियरापुलिस के बिशप के साथ सहमत होता है'' (यूसबयूस *एक्लेस्यिस्टिकल हिस्टरी* 2.15.1–2)। [20]इफिसियंस *पनारियन* 2.4.6.10.

[21]जेरोम ने लिखा, ''पतरस के चेले और अनुवादक मरकुस ने रोम के भाइयों की विनती पर संक्षिप्त सुसमाचार लिखा जिसमें वे बातें शामिल की गई जो उसने पतरस से सुनी थीं। जब पतरस ने यह सुना, तो उसने इसे स्वीकृति दे दी और अपने अधिकार से इसे कलीसियाओं में पढ़ने के लिए प्रकाशित किया ...।'' (जेरोम *ऑन इलस्ट्रियस मेन* 8)। [22]यूसबियुस *एक्लेस्यिस्टिकल हिस्टरी* 3.39.15 में पापियास की गवाही दर्ज है। [23]इरेनियुस *अगेंस्ट हेयरसिस* 3.1.1. [24]मार्टिन हेंगेल, *स्टडीज़ इन द गॉस्पल ऑफ़ मरकुस* (यूजीन, ऑरेग: विपफ ऐंड स्टॉक, 198 5), 3. [25]ओरिगन *फ्रेगमेंटस: कॉमैंट्रीस ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मत्ती* 1. [26]मेरिल सी. टैनी, *न्यू टैस्टामैंट सर्वे,* सम्पा. वाल्टर एम. डन्नेट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एडज़्मैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 162. यूसबियुस *एकलेसियस्टिकल हिस्टरी* 2.15 में क्लेमेंट की गवाही दर्ज है। [27]सी. जी. मोंटेफियोर, सम्पा., द *सिनोप्टिक गॉस्पल्स,* अंक. 1 (लंदन: मैक्मिलन ऐंड कं., 1909), xxi. [28]आर. सी. एच. लेंस्की, द *इंटरप्रिटेशन ऑफ़ सेंट मरकुस गॉस्पल* (मिनियापोलिस, मिनियापोलिस: ऑग्सबर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1946), 15–16. [29]इरेनियुस *अगेंस्ट हैरिसस* 3.1.1. [30]फार्मर, 3:1987.

[31]बरनेट हिलमेन स्ट्रीटर, *द फ़ोर गॉस्पल्स: ए स्टडी ऑफ़ ओरिजिंस* (लंदन: मैक्मिलन ऐंड कं., 1924; रीप्रिंट, यूजीन, ओरिजन: विफ ऐंड स्टॉक, 2008), 151–98. [32]विलियम आर. फार्मर, द *सिनोप्टिक प्रॉब्लम* (न्यू यॉर्क: मैक्मिलन कंपनी, 1964)। [33]इरेनियुस *अगेंस्ट हैरिसस* 3.1.1. [34]यूसबियुस *एक्लेसियस्टिकल हिस्टरी* 6.14. 6–7 में क्लेमेंट हाइपोटाइपोसस में उद्धृत। [35]जेरोम *ऑन इलस्ट्रियस मेन* 8. [36]डब्ल्यू. ग्राहम स्क्रोगी, *नोअ योर बाइबल* (ओल्ड टप्पन, न्यू जर्सी: फ्लेमिंग एच. रेवेल, 1965), 23. [37]मरकुस में दर्ज यीशु के आश्चर्यकर्मों में शामिल हैं, आराधनालय में दुष्टात्मा से ग्रस्त आदमी को चंगाई (1:21–28); पतरस की सास को चंगा करना (1:29–31); दुष्टात्माओं और विभिन्न रोगों से चंगाई देना (1:32–34); कोढ़ी को चंगा करना (1:40–45); लकवे के मारे को चंगा करना (2:1–12); सूखे हाथ वाले आदमी को चंगा करना (3:1–5); गिरासेनी में दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति को चंगा करना (5:1–20); याईर की बेटी को चंगा करना (5:22–24, 35–43); लहू बहने वाली महिला को चंगा करना (5:25–34); गन्नेसरत के पास के गांवों, शहरों और ग्रामीण इलाकों में बहुत से बीमारों को चंगा करना (6:53–56); दुष्टात्मा से ग्रस्त बच्ची को चंगा करना (7:24–30); बहरे आदमी को चंगा करना (7:31–37); बैतसैदा के एक अंधे व्यक्ति को चंगा करना (8:22–26); मिरगी वाले लड़के को चंगा करना (9:14–29); और अंधे बरतिमाई को चंगा करना (10:46–52)। हम तूफान को शांत करने में उसकी सामर्थ दिखाने (4:35–41); पांच हज़ार को लिखाने (6:30–44); पानी पर उसके चलने (6:45–52); चार हज़ार को खिलाने (8:1–9); और अंजीर के पेड़ को उसका श्राप देने (11:12–14, 20, 21) को भी देखते हैं। [38]यह गिनतियां अकॉर्डेंट®9

बाइबल सॉफ्टवेयर, © 2012, ओक ट्री सॉफ़्टवेयर, Inc. पर आधारित हैं। [39]यह शब्द ''दुष्टात्मा'' (demons) है न कि devils (शैतान)। यूनानी भाषा के नये नियम में διάβολος (*diabolos, "devil"*) और δαιμόνιον (*daimonion,* "demon" या दुष्टात्मा) में अंतर पर विशेष ध्यान रखा गया है। नये नियम में पहले वाला शब्द यह संकेत देते हुए कि दुष्ट केवल एक ही है शैतान के लिए इस्तेमाल हुआ है। बाद वाला शब्द आम तौर पर बहुवचन में होता है जो कि दुष्टात्माएं बहुत थीं। [40]इरेनियुस *अगेंस्ट हेयरसिस,* 3.10.5.

[41]टेटियन *डायटेसरॉन* 55.5–16. [42]हिप्पोलिटस *अगेंस्ट नोएटस* 18. [43]जैक पी. लुईस, ''द एंडिंग ऑफ़ मरकुस,'' *दीज़ थिंग्स आर रिटन* (सरसी, आरकैंसा: ट्रुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल, 2013), 425–26. [44]वहीं, 426. [45]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, द *न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्री,* अंक. 1, मत्ती ऐंड मरकुस (डेस मोइनेस: यूजीन एस. स्मिथ, 1875), 382.